

हयालय पुं. (तत्.) अश्वशाला/अस्तबल/घुड़साल।

हयाशन पुं. (तत्.) 1. एक प्रकार का धूप 2. सरलीक का पौधा।

हयी पुं. (तत्.) 1. घुड़सवार 2. अश्वारोही घुड़सवार स्त्री. घोड़ी।

हर पुं. (तत्.) 1. महादेव 2. हरण करने वाला 3. किसी भिन्न की भाजक संख्या जैसे- $3/4$ में 4 हर है 4. (देश.) हल (खेत जोतने का एक उपकरण) 5. वि. फा. एक-एक प्रत्येक।

हरई/हरएँ क्रि.वि. (देश.) 1. धीरे-धीरे 2. बिना शक्ति प्रयोग किए।

हरक वि. (तत्.) 1. हरण करने वाला 2. ले जाने वाला, पहुँचाने वाला।

हरकत स्त्री. (अर.) 1. गति 2. चाल।

हरकना अ.क्रि. (देश.) 1. किसी वस्तु को पाने के लिए लालायित, आतुर होना 2. स.क्रि. (देश.) वर्जन करना, रोकना, मना करना।

हरकारा पुं. (फा.) 1. पत्र या संदेश ले जाने वाला 2. डाकिया से भिन्न व्यक्ति जो पहले ग्रामों में डाक पहुँचाया करता था, धावक।

हरकेस पुं. (तद्.) मार्गशीर्ष (अगहन) में पैदा होने वाला एक धान।

हरख पुं. (तद्.) हर्ष, प्रसन्नता, खुशी।

हरखना अ.क्रि. (तद्.) हर्षित होना, खुश होना।

हरखाना क्रि.स. (तद्.) हर्षित होकर, खुश होकर।

हरगम वि. (फा.) सहानुभूति वाला, सहानुभूति रखने वाला, हमदर्द।

हरगिज क्रि.वि. (फा.) किसी दशा में भी, कदापि, कभी।

हर-गिरि पुं. (तत्.) शिव/महादेव का पर्वत, कैलास पर्वत।

हर-गिला पुं. (देश.) सारस की तरह का लेकिन उससे थोड़ा बड़ा एक पक्षी।

हरगौरी स्त्री. (तत्.) 1. 'शिव और पार्वती' 2. शिव की अर्धनारीश्वर मूर्ति।

हर-गौरी रस पुं. (तत्.) आयु. 'रससिंदूर'।

हरचंद अव्य. (फा.) 1. किसी तरह से 2. अनेक बार 3. यद्यपि 4. कितना ही उदा. है वह गरूरे हुस्न से बेगान ए वफ़ा; हरचंद उसके पास दिले हक़शनास है -गालिब।

हरचूड़ामणि पुं. (तत्.) (शिव/महादेव की जटाओं में चूड़ामणि के समान शोभित) चंद्रमा।

हरज पुं. (अर.) हानि, क्षति, नुकसान।

हरजा पुं. (फा.) हानि, क्षति वि. हर स्थान पर, हर जगह।

हरजाई वि. (फा.) हर जगह पहुँचने वाली, व्यभिचारिणी, कुलटा पुं. हर जगह घूमने वाला व्यक्ति, व्यभिचारी पुरुष/स्त्री।

हरजाना पुं. (फा.) नुकसान के बदले क्षतिपूर्ति के लिए दिया गया धन, रकम आदि।

हरजेवड़ी स्त्री. (देश.) एक प्रकार की छोटी झाड़ी, जिसकी जड़ और पत्तियों का व्यवहार औषधि के रूप में होता है।

हरजोता पुं. (देश.) वह जो हल जोतने का काम करता हो, उजड़ और गँवार, मुंडा नामक पक्षी।

हरट्ट वि. (देश.) हष्ट-पुष्ट, मोटा-ताजा, मजबूत, हट्टा-कट्टा, तगड़ा पु. एक प्राचीन देश का नाम, रहँट

हरठिया पुं. (देश.) रहँट के बैलों को हाँकने वाला व्यक्ति।

हरड़ स्त्री. (तद्.) एक प्रकार का वृक्ष जो वनों में या पर्वतों पर पाया जाता है और जिसके पत्ते महुआ के पत्रों के समान परंतु पतले और लंबे होते हैं; औषधोपयोगी फल टि. एक रेचक और कसैला फल, जो अनेक रोगों का नाशक होता है, हरड़, बहेड़ा और आँवला का मिश्रण 'त्रिफला' कहा जाता है।

हरण पुं. (तत्.) 1. किसी की वस्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक ले लेना, छीनना, लूटना, अपहरण, दूर करना 2. हटाना 3. गणि. किसी